श्रावण पूर्णिमा पर पूर्णता की अभिलाषा

जिस समाज में मिले न
नारी को स्वाभाविक गरिमा
क्रूर असंस्कृत वह समाज
पतनोन्मुख पाता लघिमा।
अब यह रक्षासूत्र करे
नर की पशुता से रक्षा
जो न स्वयं निष्काम करेगा
कैसे अन्य सुरक्षा।1।

आओ अब सार्थक कर लें हम
पावन रक्षाबन्धन
हो अतीत की बात बालिकाओं
का सकरूण क्रन्दन।
स्नेह और वात्सल्य पूत, श्रद्धा
पूरित हो अन्तर
अमल भाव निर्झर प्रस्रवित हो
शीतल सुखद निरन्तर।2।

सब शुभ भावों की प्रतिमा सी
लिए धरा सी धृति को
नारी है आधार सृजन का
नमन करो विधि कृति को।
जो भी शुभ सात्विक उदात्त है
भावपूर्ण उज्जवल है
उसकी रक्षा से ही नरता का
अस्तित्व प्रबल है।3।

याद न आए जब अबला को
अपनी यहां सुरक्षा
तब समझो उत्तीर्ण कर रहा
मानव अगली कक्षा।
श्रावण मेघ सरस हो बरसे
करे हरित वसुधा को
पूर्ण चन्द्र सा मन हो विकसित
शीतल धरे सुधा को।4।

दिनांकः— 26/08/2018 शिव कुमार मिश्र

स्थानः— भोपाल